ORIGINAL ARTICLE ISSN:-2230-7850

Indian Streams Research Journal

लखनऊ के तबला घराना की वादन विशेषताएं

सारांश :-

दिल्ली में दीर्घकाल तक तबला वादन की कला फलती–फूलती रही। शनैः–शनैः दिल्ली से बाहर तबले का प्रचार होने लगा। इस दिशा में लखनऊ पूरब का सर्वप्रथम घराना है, जहाँ तबले का प्रवेश हुआ। नवाबी शान–शौकत के कारण लखनऊ एक रंगीन शहर था। यहाँ के अधिकतर रईस एवं नवाब संगीत प्रेमी थे। वहाँ पर संगीत एवं संगीतज्ञों को बहुत सम्मान दिया जाता था। अतः गायकों, वादकों तथा नर्तकों की भीड़ लगी रहती थी।

श्रीकान्त शुक्ल

(प्रबन्ध निदेशक), सरस्वती म्यूज़िकल अकादमी, लखनऊ।

प्रस्तावना :–

संगीत की दृष्टि से दिल्ली के बाद संगीतज्ञों का मुख्य केन्द्र लखनऊ बना। यहाँ पर ख्याल गायकी पनप रही थी। संगीत तबीयत के लखनवी नवाब और रईसजादे ठुमरी जैसी श्रृंगारिक गायकी विशेष रूप से पसन्द करते थे। लखनऊ में उस समय कथक नृत्य का काफी प्रचार था। लखनऊ में महाराज कालकादीन और महाराज बिन्दादीन का एक कथक घराना था।

उन दिनों संगत के लिये एक मात्र पखावज ही वाद्य था, लेकिन ख्याल के स्वर और ठुमरी की नज़ाकत के लिये तबले के कलाकारों ने इस अवसर का लाभ उठाया और पखावज के बोलों को तबले में अपने वादन में परिवर्तन कर प्रस्तुत किया। इस प्रकार तबला–वादकों की दृष्टि लखनऊ पर आयी। वहाँ ख्याल तथा ठुमरी की संगत के लिये तो तबला बेहतरीन साबित हुआ, किन्तु नृत्य की ज़ोरदार लम्बी–लम्बी परनों और चक्करदारों के सामने वह उलझ गया। अतः उन उस्तादों ने दिल्ली के तबले में आवश्यक परिवर्तन किये। लखनऊ बाज के विषय में ऐसी मान्यता है कि लखनऊ की तबला–वादन शैली पर नृत्य का अत्यन्त प्रभाव है। दिल्ली का बन्द और मुलायम तबला लखनऊ में नृत्य के सम्पर्क में आकर खुला और ज़ोरदार हो गया।

लखनऊ बाज थपिया बाज के नाम से भी मशहूर है, क्योंकि इस बाज में विशेषतः दाँये हाथ की चार उँगलियों को मिलाकर पूरे हाथ से आघात किया जाता है। उससे लखनऊ घराने का स्वतंत्र वादन ज़ोरदार होने के साथ–साथ कर्ण–प्रिय भी होने लगा। दाँयें के सुर पर किये हुये आघात से निर्मित होने वाली गूँज चाँटी पर किये हुये आघात से ज्यादा दूर तक सुनाई देती है और चाँटी पर निर्मित होने वाली ध्वनि से सुर पर निर्मित होने वाली ध्वनि मधुर होती है, उसमें मिठास होती है।

लखनऊ घराने ने चाँटी से अधिक स्याही का और दो उँगलियों के स्थान पर चारों उँगलियों का प्रयोग शुरू किया। बोलों के निकास में परिवर्तन करने के साथ टुकड़े चक्रदार आदि का समावेश कर नये बाज का निर्माण किया। यह नवीन बाज दिल्ली के बन्द बाज की अपेक्षा अधिक खुला और जोरदार था, और इस प्रकार लखनऊ घराने में नवीन बाज का निर्माण हुआ।

लखनऊ बाज अर्थात् पूरब का बाज लव और स्याही प्रधान बाज है। यह अधिक जोरदार और गूँजयुक्त वादन शैली है। इसमें नृत्य के लिए विशेष रचनाओं का समावेश किया गया है। यह बाज संगति के लिये अधिक उपयुक्त रहा है।

इस प्रकार लखनऊ घराना दिल्ली घराने से आया और उसके बाज में परिवर्तन कर एक नवीन बाज को जन्म दिया, जो लखनऊ बाज अर्थात् पूरब बाज कहलाया। लखनऊ में विकसित होने के कारण यह बाज लखनऊ बाज के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

''देश के पूर्वी भाग में सर्वप्रथम लखनऊ घराना और पूरब बाज अस्तित्व में आया। ज्ञातव्य है कि पूरब के अन्य घराने इसी घराने से विकसित हुए हैं।''

तबला–वादन में जोरदारी के लिये उपयुक्त बोल लखनऊ बाज अर्थात् पूरब बाज में ज्यादा है। जैसे–धिरधिर, धागेतेटे, क्रधातिट, धागेदिगनागेतिट, धेत्ता, धेत्त–धेत्त, कताकता, किटतक, धेटधेट, धड़ाऽना बोल समूह हैं। लखनऊ घराने की गतें, तोड़े, चक्करदार आदि रचनायें साधारणतः सरल, सुलभ चतुरश्र जाति में बंधी होने के साथ–साथ बोलों में निकास की मिठास भी इस घराने की खासियत है। लखनऊ के एक ख़लीफ़ा मरहूम उस्ताद वाजिद हुसैन ख़ाँ साहब की तैयारी और दाँये–बाँये का वजन आखिर तक अप्रतिम रहा। रेले, गतें, गतपरनें और तिहाइयाँ जैसे सभी अंगों से उनका तबला समृद्ध रहा है। बाएँ तबले पर अँगूठे द्वारा मीड़, घसीट या घिस्सा उत्पन्न करने की प्रथा इस घराने के वंशजों में विशेष रूप से देखी जाती है।

इस बाज की वादन शैली में दाहिने तबले पर तर्जनी और मध्यमा उँगलियों के साथ–साथ अनामिका उँगली के प्रयोग का बहुत महत्त्व रहता है। इसके अलावा इस बाज में लव के प्रयोग का भी विशेष महत्त्व है।

लखनऊ बाज में पखावज वादन शैली की भाँति गत परन, टुकड़े, चक्करदार तथा फरमाइशी इत्यादि रचनायें बजायी जाती हैं। इसलिये यह बाज खुला और जोरदार हो गया है।

लखनऊ बाज लव और स्याही प्रधान बाज है। इसकी शैली अधिक ज़ोरदार और गूंज युक्त है। इसमें दिल्ली के समान दो उँगलियों के स्थान पर सभी उँगलियों का प्रयोग प्रचलित है। इसमें, गत, टुकड़े, परन, चक्करदार, आदि तो बजाये ही जाते है और नृत्य के साथ–साथ बजाने के लिये विशेष रचनाओं का समावेश किया गया है।

संक्षेप मे हम यह कह सकते है कि लखनऊ बाज पूरब का बाज सर्वांगीण बाज है, जो संगत के साथ–साथ स्वतन्त्र–वादन के लिये भी उपयुक्त है। यही कारण है कि पूरब के तबला वादक विशेष रूप से चमक रहे हैं और पूरब बाज अर्थात् लखनऊ बाज तबला–जगत में एक प्रसिद्ध वादन–शैली के रूप में जाना जा रहा है।

संदर्भ सूचि

1. पखावज और तबला के घराने एवं परम्परायें– डा0 आवान ई. मिस्त्री–पृ.–144
2. तबला–अरबिन्द मुलगांवकर–पृ.–229
3 .तबले का उद्‌गम विकास औद वादन शैलियां–योगमाला शुक्ला–पृ.–188
4..तबले के घराने वादन शैलियाँ एवं बंदिशें–डा0 सुदर्शन राम–पृ.–50।
5. भारतीय संगीत का ऐतिहासिक विश्लेषण–डॉ. स्वतन्त्र शर्मा।
6. पखावज और तबला के घराने एवं परम्परायें–डॉ. आवान ई. मिस्त्री–पृ.–115